तत्वज्ञान की संदेशवाहिका—

श्रीमती एनी बेसेन्ट



लेखक--
श्री सत्यभक्त

युग निर्माण योजना मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तत्त्व ज्ञान की संदेश वाहिका श्रीमती एनीबेसेण्ट

मानव-समाज का निर्माण नर-नारी के संयोग से हुआ है। समाज के स्थायित्व और संचालन के लिये जितनी आवश्यकता नर की है उससे किसी प्रकार कम नारी की नहीं है। केवल सन्तानोत्पत्ति और उसका पालन करने की दृष्टि से ही स्त्री का दर्जा महत्त्वपूर्ण नहीं है, पर वास्तव में प्राचीन समय से उसने समाज के विकास और उसके संरक्षण में बहुत अधिक सहयोग दिया है। मानव-जाति के आदिकालीन इतिहास में एक समय तो ऐसा था जब पुरुष केवल शिकार ही करता रहता था और घर की समस्त देखभाल, व्यवस्था, रक्षा, पालन-पोषण एकमात्र स्त्री के ऊपर ही निर्भर था।

पर इसके बाद जब निजी सम्पत्ति और जायदाद की प्रणाली बढ़ने लगी और उसके संरक्षण के लिए शक्ति के प्रयोग और संघर्ष की आवश्यकता बढ़ गई तो घर और समाज की बागडोर विशेष रूप से पुरुषों के हाथ में आने लग गई। स्त्री स्वभाव से निर्माणकर्त्री थी, लड़ने-भिड़ने का संहारक कृत्य उसकी प्रकृति के अनुकूल न था। इससे पुरुष के अधिकार और उसका नियंत्रण दिन पर दिन बढ़ने लगा और कुछ काल पश्चात् ऐसी परिस्थिति आ गई जब स्त्री को एक प्रकार से पुरुष की सम्पत्ति बना लिया गया। हमारे देश के बड़े पुरुष, खासकर राजा-महाराजा अनेकों रानियाँ, दासियाँ रखने लगे। इसका परिणाम समाज के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ। स्त्री बौद्धिक और व्यावहारिक दृष्टि से हीन मानी जाने लगी और घर की चहार दीवारी में आबद्ध हो जाने से उसका सांसारिक ज्ञान घटने लगा। इस प्रकार पुरुषों ने आधी मानव जाति की शक्ति और उपयोगिता को बहुत कुछ नष्ट कर डाला। उच्च श्रेणी के समाज में तो स्त्री की स्थिति उपयोगिता के बजाय केवल शोभा की रह गई और वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक भार—स्वरूप बन गई जिसकी हमेशा रक्षा करते रहना आवश्यक हो गया।

यह स्थिति मानव-जाति की प्रगति की दृष्टि से अन्त में हानिकारक ही सिद्ध हुई। इससे करोड़ों स्त्रियों की उपार्जन—क्षमता नष्ट हो जाने के साथ ही सन्तान के लालन-पालन में भी दुष्परिणाम दिखलाई पड़ने लग। घर में आबद्ध हो जाने के कारण स्त्री में जो संकीर्णता की भावना उत्पन्न हो गई थी, वही उसकी सन्तान को भी प्रभावित करने लगी और मनुष्यों में सामूहिक हित और सामाजिक एकता के बजाय व्यक्तिगत लाभ और पार्थक्य की वृत्तियाँ पनपने लगीं। इससे समाज, देश, राष्ट्र, संसार अनगिनती टुकड़ों में बंट गया और उनमें सहयोग के बजाय संघर्ष की प्रवृत्ति ने उचित से अधिक स्थान पा लिया।

अब पिछले सौ-डेढ़ सौ वर्षों से जब विचारकों और समाज हितैषियों ने इस अवस्था की हानियों को अनुभव किया तो उन्होंने नारी—स्वाधीनता की आवाज उठाई, जिससे स्त्रियों में कुछ जागृति के लक्षण प्रकट होने लगे, और अनेक महिलायें आगे बढ़ कर समाज, देश, राष्ट्र सम्बन्धी मामलों में भाग लेने लगीं उनमें से अनेक विद्या, बुद्धि कर्तृत्व शक्ति की दृष्टि से उच्च स्थान पर पहुँच गईं और उन्होंने मानव-समाज को मार्ग-दर्शन कराने में प्रशंसनीय कार्य कर दिखाया। श्रीमती एनीबेसेण्ट की गणना ऐसी ही महिमामयी नारियों में की जाती है।

श्रीमती एनीबेसेण्ट की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि संकीर्णता की भावना बहुत काल से नारी-जाति की प्रधान त्रुटि हो गई है वे उससे सर्वथा पृथक् थीं और इस दृष्टि से उनका उदाहरण नारी-समाज के लिए बहुत बड़ा प्रेरक है। वे इङ्गलैण्ड में पैदा हुई, पर उन्होंने भारतवर्ष को अपना घर बना लिया और उनका कार्य-क्षेत्र संसार के दूर-दूर के देशों तक फैला हुआ था। इसी प्रकार जन्म से वे ईसाई थीं, आरम्भ में उनको उस धर्म की शिक्षा भी दी गई, पर आगे चल कर वे हिन्दू-धर्म के नियमों का पालन करने लग गईं। अपने उद्योग से ही वे संसार के सब धर्मों की ज्ञाता बन गईं और उन्होंने एक ऐसे सार्वभौम धार्मिक-समाज का संचालन किया जिसने सभी मजहबों और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



देशों के व्यक्तियों में एकता और प्रेम भावना उत्पन्न करने में बड़ा काम किया।

श्रीमती बेसेन्ट का जन्म १८४७ में इङ्गलैन्ड के एक मध्य श्रेणी के गृहस्थ के घर में हुआ। उनके पिता गणित शास्त्र के विद्वान थे और डाक्टरी में भी उनको बड़ी रुचि थी। उनकी माता भी एक प्रसिद्ध वंश में से थी जिससे उनको अपने परिवार के सम्मान का सदा ध्यान रहता था। वे आगे चलकर अनेक प्रकार विपत्तियों में भी इसीलिये यथासम्भव स्वावलम्बिनी बनीं रहीं और श्रीमती बेसेन्ट ने भी उनसे स्वावलम्बन का जो पाठ सीखा उसके सहारे बिना किसी बड़े साधन के वे अपने ही उद्योग से इतना आगे बढ़ सकीं कि संसार भर में एक सम्माननीय धार्मिक और राजनीतिक नेता के रूप में उन्होंने ख्याति प्राप्त कर ली।

जब श्रीमती बेसेन्ट पाँच वर्ष की हुईं तो इनके पिता का देहान्त हो गया। इससे इनकी माता के ऊपर बहुत बड़ा भार आ पड़ा। घर में कोई बड़ी सम्पत्ति अथवा जायदाद न थी और ये अपने बच्चों को ऊँची शिक्षा दिला कर सभ्य समाज के योग्य बनाना चाहती थीं। इसलिये वे 'हैरो' नामक स्थान में जाकर रहने लगीं जो छोटा होने से कम खर्च का था, पर जहाँ एक ऐसा स्कूल था जिसका नाम शिक्षा—जगत में दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। यहाँ उनको एक ऐसा व्यक्ति मिल गया जिसने इन्हें अपने लड़के की देखभाल और शिक्षा की व्यवस्था करने को नियुक्त कर दिया। इस प्रकार उसके लड़के के साथ इनके बच्चों की शिक्षा भी होने लगी। इसके पश्चात् हैरो स्कूल के हैडमास्टर डा० बोधम और उनकी पत्नी से इनका परिचय हो गया और उनकी सहायता से उनको एक ऐसे मकान में रहने को स्थान मिल गया जिसमें कुछ लड़के रहते थे। बेसेन्ट की माता उस 'होस्टल' की व्यवस्थापिका बना दी गई। उसी मकान में एक अध्यापक भी रहने लग गये। इस तरह उनको जीवन निर्वाह का एक कार्य मिल गया और बच्चों की शिक्षा भी अधिक नियमित रूप से होने लगी।

माता पिता का सन्तान के प्रति सबसे बड़ा कर्त्तव्य यही है कि वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसको शिक्षित और कर्मठ बना द । यदि बच्चों में ये दो गुण आ गये तो आगे चल कर वे अपना रास्ता आप बना लेंगे । पर अभी तक हमारे देश की मातायें इस तरफ बहुत कम ध्यान देती हैं । वे स्वयं अशिक्षित होती हैं और इसलिये अपनी सन्तान की शिक्षा को भी बहुत कम महत्त्व देती हैं । वे बचपन में सन्तान का लाड़-दुलार करना और जहाँ तक बन पड़े उनके खाने-पहिनने की अच्छी व्यवस्था करना ही अपना कर्त्तव्य समझती हैं । पर इस प्रकार के व्यवहार से बच्चों का अहित ही होता है । उनको आराम से, फैशन मे रहने की आदत पड़ जाती है और परिश्रम तथा काम से वे जी चुराने लगते हैं । इसके परिणाम स्वरूप उनको आगामी जीवन मे तरह-तरह की कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ती हैं और वे समाज का हित करने के बजाय उसमें प्रायः विकृतियाँ उत्पन्न करने के ही निमित्त बन जाते है ।

शिक्षा और देश भ्रमण--

इस समय संयोग से कुमारी मेरियट नाम की एक धनी वृद्ध महिला हैरो में आईं और एनीबेसेन्ट की माता का उनसे परिचय हो गया । कुमारी मेरियट ने आजन्म विवाह नहीं किया था और अपना समस्त जीवन अपने परिचितों, कुटम्बियों, दीन-दुःखियों की सहायता में ही लगाया था । उन्होंने जब एनी बेसेन्ट को देखा तो वे उनकी तरफ आकर्षित हो गई और उनकी माता से कहा कि--"इस लड़की को मेरे साथ रख दो जिससे इसकी शिक्षा-दीक्षा की उचित व्यवस्था हो सके ।" पहले तो माता को अपनी पुत्री का वियोग कठिन जान पड़ा पर जब उन्होंने उसके भविष्य पर विचार किया तो वे राजी हो गई ।

आरंभिक जीवन में एनी को धार्मिक शिक्षा दी गई और 'पिली ग्रिम्ज प्रोग्रेस' और 'पैराडाइज लास्ट' जैसी पुस्तकें पढ़ने से उनमें धर्म-कार्यों के लिए बड़ा उत्साह उत्पन्न हो गया । परिवार की धार्मिक सभा में सबको अलग-अलग खड़े होकर प्रभु ईसा की प्रार्थना करनी पड़ती थी । पाँच वर्ष की एनी को जब कहा जाता तो पहले तो उनको भय लगता, पर जब मुँह खुल जाता तो ऐसे मधुर ढङ्ग से बोलतीं कि सभी सराहना करने लग जाते ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


इस प्रकार उसी समय से इसमें भाषणकला का गुण विकसित होने लगा, जिसके बल से आगे चलकर उन्होंने जीवन में बहुत बड़ी सफलता पाई और संसार भर में लाखों अनुयायी बना लिये।

कुमारी मेरियट स्वयं बड़ी समझदार और परोपकारी महिला थीं। अगर कोई भूखा गरीब मनुष्य उनके पास आता तो वे उसे पैसा न देकर स्वयं भोजन करातीं। यदि वह स्वस्थ और कार्य करने लायक होता तो उसके लिये स्वयं दौड़धूप करके कोई रोजगार तलाश कर देती थी उनके इन गुणों का प्रभाव एनी तथा अन्य लड़कियों पर भी पड़ा। जब वे लोग किसी दीन-दुःखी को देखकर उसकी सहायता की प्रार्थना करतीं तो कुमारी मेरियट उनको समझाती कि "तुम लोग एक सप्ताह तक चीनी न खाकर या कोई दूसरी आराम की चीज छोड़ कर पैसा बचाओ और उससे इसकी सहायता करो।" इस प्रकार वे उनको स्वयं त्याग करके दूसरों का उपकार करने की शिक्षा देती थीं।

एनी जब पन्द्रह वर्ष की हुई तो कुमारी मेरियट इनको अन्य परिवार वालों के साथ विदेश यात्रा के लिये ले गई। इससे इनका व्यावहारिक ज्ञान बहुत बढ़ गया और जर्मन तथा फ्रांसीसी भाषा का अभ्यास भी हो गया। पर अब कुमारी मेरियट ने धीरे-धीरे इनको पढ़ाना बन्द कर दिया। जब इन्होंने कहा कि 'अब आप मुझे पढ़ाती क्यों नहीं?" तो उन्होंने कहा कि—मैं सदैव तुम्हारे साथ नहीं रहूँगी, इसलिये अब तुमको स्वयं अपने पैरों पर खड़े होने का अभ्यास भी करना चाहिये। जो लोग अन्त तक शिक्षकों और अभिभावकों के सहारे ही रहते हैं उनको शिक्षा समाप्त करने पर एकाएक मालूम पड़ता है कि अब क्या करें? इस लिये तुमको अभी से स्वावलम्बन का अभ्यास करना चाहिये। तुमको आरम्भिक शिक्षा अच्छी तरह मिल चुकी है। अब उद्योग करोगी तो स्वयं इसको बढ़ा कर जो कार्य करना चाहो उसके योग्य बन सकती हो।" इस प्रकार कुमारी मेरियट ने इनके जीवन की सफलता का मार्ग खोल दिया, जिससे आगे चलकर वे हर तरह के संघर्ष में साहस रख कर आगे बढ़ सकीं और अपने लिये ही नहीं समाज के लिये भी बहुत कुछ करने में समर्थ हो सकीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



समाज सेवा का श्रीगणेश—

इंगलैण्ड वापस आकर एनी और उसकी माता मैंचेस्टर में रहने लगे। यह उद्योग धन्धों का नगर था और यहाँ मजदूरों की बहुत बड़ी बस्ती थी। इन लोगों की इस समय बहुत खराब हालत थी और उनको उद्योग पतियों के बड़े-बड़े अन्याय सहने पड़ते थे। एनी को यह बहुत बुरा लगता था और वह उनकी सहायता, सेवा करने का मार्ग ढूँढ़ने लगी। उस समय वहाँ 'रावर्ट' नाम का वकील इन अन्याय पीड़ितों की सेवा में संलग्न था। उन दिनों कोयलों की खानों में काम करने वाली स्त्रियों की बड़ी बुरी हालत थी। दिन भर कठोर परिश्रम करने पर भी उन बेचारियों को न पूरा खाना मिलता था न तन ढकने को साबुत कपड़ा। वे ठण्ड सहती हुई अपने दूध-पीते बच्चों को गोद में सँभाले किसी प्रकार काम करती रहतीं। पाँच-सात वर्ष के बच्चों को दरवाजे पर रखवाली के लिये बैठा दिया जाता और जब वे सो जाते तो ठोकर मार कर उठाया जाता।

'दरिद्रों के वकील रावर्ट' और उसके कुछ अन्य सहकारियों ने इन अन्यायों के विरुद्ध आन्दोलन उठाया। एनी भी उसमें शामिल हो गई। रावर्ट कहा करता था—"मजदूर—गरीब ही काम करने वाली शहद की मक्खियाँ हैं, वे ही समस्त धन को पैदा करने वाले हैं। इनके साथ न्यायोचित व्यवहार होना चाहिये, स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने का अवसर दिया जाना चाहिये।" एनी पर ऐसे उपदेशों का बड़ा प्रभाव पड़ता था और वह बड़े उत्साह से मजदूर-आन्दोलन का कार्य करती थी। यहीं उन्होंने सार्वजनिक आन्दोलनों में भाग लेने की प्रेरणा प्राप्त की।

एनी को राजनीति की तरफ आकर्षित करने वाला एक और कारण उसी समय पैदा हो गया, उस समय आयरलैन्ड में जोरों से स्वतन्त्रता-आन्दोलन चल रहा था और अँगरेज सरकार बड़ी क्रूरता के साथ उसका दमन कर रही थी। एनी की माता भी आयरिश ही थी और इसलिये इनकी सहानुभूति आयरलैन्ड के साथ थी।

आयरलैण्ड के दो नेता कर्नल केली और कप्तान डीजे मैंचेस्टर में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गिरफ्तार कर लिये गये और उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। इससे इंगलैंड में रहने वाले आयरिश लोगों में बड़ा जोश फैल गया और एक दिन उन्होंने इकट्ठे होकर जेलखाने की गाड़ी पर, जिसमें दोनों नेताओं को अदालत से लाया जा रहा था, हमला कर दिया, यद्यपि उस समय एक कांस्टेबिल को मार कर दोनों कैदी छुड़ा लिये गये, पर बाद में पुलिस ने आकर भीड़ पर हमला किया और चार व्यक्तियों को हत्या के अपराध में गिरफ्तार कर लिया। एनी भी इनका मुकदमा देखने जाती थी और जब उनको प्राण दण्ड दिया गया तब वह बड़ी दुःखी हुई। उसने बाद में इस सम्बन्ध में लिखा कि "यदि इन वीरों ने किसी अन्य देश की स्वाधीनता के लिये इसी प्रकार युद्ध किया होता तो इंगलैण्ड वाले उनका स्वागत और सम्मान करते। परन्तु इन आयरलैण्ड की स्वाधीनता के लिये प्राण देने वालों को मामूली अपराधियों की तरह उनको कबरिस्तान में गाड़ दिया गया। यह मनोवृत्ति स्वार्थपरता और संकीर्णता की ही परिचायक है।"

विवाह और तलाक—

सन् में १८६६ में इनकी माता ने इनके जीवन का मार्ग बदलने के उद्देश्य से इनका विवाह रेवरेण्ड फ्रेंक बेसेन्ट नामक पादरी से कर दिया। ये उस समय यद्यपि धार्मिक स्वतन्त्रता की अनुयायी बनती जा रही थीं और 'ईसाई धर्म ही सच्चा है, इस विचार से हटती जा रही थीं, पर एक पादरी के साहचर्य में रहने से गरीबों की सेवा करने का अधिक अवसर मिलेगा यह सोचकर इन्होंने इस सम्बन्ध को स्वीकार कर लिया। पर यहाँ तो मामला उल्टा निकला। पादरी बेसेण्ट परम्परावादी पंडित-पुजारियों की तरह केवल अपने धार्मिक-कृत्यों से सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति था जब कि ये सत्य की दृढ़ जिज्ञासु थीं। इनका पति एकमात्र बाइबिल पर विश्वास रखने वाला था, पर ये संसार के सभी तरह के दार्शनिक और धार्मिक मतों की समीक्षा करके सत्य का निर्णय करना चाहती थीं। इनका कार्यक्षेत्र भी समाज सुधार तथा राजनीतिक आन्दोलन में भाग लेने के कारण दूर-दूर तक फैला हुआ था; इससे विवाह के कुछ महीने बाद ही दोनों में मत भेद प्रकट होने लगा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर धीरे-धीरे ये इस गाड़ी को खीचतीं रहीं और इस बीच में इनके दो सन्तान एक लड़का और एक लड़की भी हो गई। इनको लेखों और व्याख्यानों आदि से जो आय होती थीं उसको भी ये पति को ही दे देती थी, इससे भी कुछ शांति बनी रहती थी।

पर इनके धार्मिक–स्वतन्त्रता के विचार दिन पर दिन बढ़ते जाते थे और सभाओं में प्रायः बाइबिल और ईसाई धर्म के विरुद्ध बातें कह देती थीं। इस पर अन्य पादरी इनके पति पर आक्षेप करने थे और बदले में वह इनको जली-कटी सुनाता था। इसी बीच में इनके दोनों बच्चे बीमार हो गये और उनके बचने की आशा न रही। इससे इनके मन को बड़ा धक्का लगा। वह कहने लगी कि भगवान् को इतना दयालु कहा जाता है तो कहाँ गई उसकी दया कि वह इन अबोध बच्चों को इतना कष्ट पाते देख रहा है और कोई ध्यान नहीं देता। फिर उनको ध्यान आया कि "स्वयं वे और उनकी माता आरम्भ से पूर्ण धार्मिक जीवन बिताती रहीं, ईसा मसीह में दृढ़ श्रद्धा रखती रही पर उनके ऊपर एक के बाद एक विपत्ति आती रही। असमय में पिता का देहान्त हो जाने से दरिद्रता की चक्की में पिसना पड़ा। दरिद्र माता को अकारण ही वकील ने ठग लिया जिससे उनकी इज्जत मुशकिल से बच सकी। अब इनके प्राण प्यारे बच्चे भी मृत्यु के मुख में पड़े हैं।"

इस प्रकार के विचारों से इनके धार्मिक विश्वासों को और भी धक्का लगा और ये नास्तिकता की ओर झुकने लगीं। इन्होंने मजदूर आन्दोलन में भी परिश्रम की कमाई खाने वाले ईमानदार 'मजदूरों' को भूखों मरते और हर तरह के अत्याचार सहते देखा था। एक बार अपने पति के साथ देहात में रहने गई। वहाँ देखा कि खेतों में काम करने वाले मजदूरों की और भी बुरी दशा है। एक छोटी कोठरी में परदादा से लेकर नाती, पन्ती तक आठ मनुष्य रहते थे। जगह इतनी कम थी कि एक पुरुष, उसकी स्त्री और दो बच्चे एक ही चारपाई पर सोते थे। एक दिन जब एक बच्चा रात के समय मर गया तो इतना भी स्थान न था कि उस मृतक को कहीं रख भी दिया जाय। उसकी माँ को रात भर मरे बच्चे के पास ही सोना पड़ा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक तरफ तो गरीब लोगों की यह बुरी दशा थी, और दूसरी ओर धनी लोग सब तरह की बेईमानी से रुपया कमाते हुए भोग विलास और दुराचारों में खर्च कर रहे थे। श्रीमती बेसेन्ट के चित्त में बार-बार यही प्रश्न उठता कि अगर ईश्वर होता तो संसार में इस प्रकार का अन्धेरखाता कैसे चल पाता ? और भाई ईश्वर है भी तो ऐसे अन्यायी ईश्वर को मानने से क्या फायदा जो ईमानदारों को ऐसे कष्ट देता है और जिसके राज्य में बेईमान और शोषण करने वाले मौज करते हैं। ऐसे विचारों के बढ़ने से ये दिन पर दिन धर्म से विमुख होती जाती थीं और इस कारण पति से सदा खट-पट होती रहती थी। जब इनकी मानसिक पीड़ा बहुत बढ़ गई तो एक दिन बहुत दुःखी होकर इन्होंने आत्महत्या का निश्चय कर लिया। पर जैसे ही जहर को मुँह से लगाया कि अन्तरात्मा ने कहा—

"ये कायर, अभी कल तक तो तू गरीबों के हितार्थ, अन्याय के प्रतिकारार्थ शहीद बनने का सपना देख रही थी और आज थोड़े से मानसिक कष्ट से व्याकुल होकर व्यर्थ में प्राण देने को प्रस्तुत हो गई। जब तू घरेलू झगड़े को बरदाश्त नहीं कर सकती, तब अन्यायियों का विरोध करते हुये जिस अपमान, यातना, अमानुषी यंत्रणा का सामना करना पड़ेगा, उसे तू कैसे सहन करेगी, ? इसलिये हिम्मत रख और अपने कर्तव्य-मार्ग पर अग्रसर होती जा। इसका जो भी परिणाम सहन करना पड़े उसे अनासक्त भाव से सहन कर। ऐसा करने पर ही तू संसार की सेवा का कुछ श्रेय प्राप्त कर सकेगी।"

अब श्रीमती बेसेन्ट ने निश्चय कर लिया कि वे अपने विश्वास, सिद्धान्तों के अनुसार ही कार्य करेंगी, फिर इसका परिणाम कैसा भी क्यों न निकले। उन्होंने विचार किया कि जब एकाएक पिता की मृत्यु हो जाने और माता की सम्पत्ति के डूब जाने पर भी निर्वाह होने पर और आगे बढ़ने का मार्ग निकल आया तो गृहस्थी अथवा जीवन-निर्वाह के कारण अन्तरात्मा के विरुद्ध अन्ध विश्वास के सामने सर झुका देना कदापि उचित नहीं। जिस तरह अन्य दुनियादार मनुष्य सांसारिक वैभव, संपत्ति के लिये सब प्रकार भय और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



आशङ्काओं को त्यागकर परिस्थितियों से संघर्ष करने, लड़ने-मरने को तैयार हो जाते हैं उसी प्रकार सत्य के खोजी को भी उसके लिये हर अवस्था में संघर्ष करने और सब प्रकार के कष्टों, विघ्न-बाधाओं को सहन करने को तैयार रहना चाहिये। संसार के अधिकांश व्यक्ति तो रुपया-पैसा आराम, शान-शौकत आदि को महत्व देते हैं पर सत्य के अन्वेषक को इन बातों की चिन्ता छोड़ कर उसी मार्ग को अपनाना चाहिये जिसका आदेश अन्तरात्मा दे।

अब श्रीमती बेसेन्ट ने अपने विचारों का खुले तौर पर प्रचार करना आरम्भ कर दिया। वे ईसा मसीह को एक महापुरुष मानती थी, वह 'ईश्वर का पुत्र था, अथवा 'मानवों का मुक्तिदाता' था इस पर इनका विश्वास न था। इसके बजाय ये गरीबों, कष्ट पीड़ितों की सेवा को, उन पर होने वाले अन्यायों का विरोध करने को ही सच्चा धर्म बतलाती थीं और जहाँ तक बन पड़ता था दीन-हीन मजदूरों तथा अन्य गरीब मनुष्यों को सहायता के लिये प्रचार करती थीं।

सन् १८७३ में इन विचारों के कारण अपने पति से मतभेद चरम सीमा पर पहुँच गया। उसको सङ्गी साथियों ने समझाया कि ऐसी स्त्री को रखने से क्या फायदा जो गिर्जाघर नहीं जाती और ईसा को 'पवित्र ईश्वरीय पुत्र' अस्वीकार करती है। इस प्रकार के विचारों के प्रकट होने से अपने साथियों मे पादरी बेसेण्ट की बदनामी होती थी। अन्त में उसने श्रीमती एनी-बेसेन्ट से कह दिया कि "या तो तुम अपने विचारों को बदल कर गिर्जाघर जाना और ईसाई धर्म के विश्वासों को स्वीकार करना आरम्भ करो अन्यथा इस घर को छोड़ दो।"

उस समय इनकी आयु २६ वर्ष की थी और मन में अपने सिद्धान्तों के लिये कोई विशेष कार्य कर दिखाने का उत्साह भरा हुआ था। इसलिये इन्होंने पति को छोड़ने का ही निश्चय किया। इस समाचार से इनकी माता को बड़ा दुःख हुआ और उसने समझा-बुझाकर पति के साथ रहने का आग्रह किया। पर इन्होंने सिद्धान्तों के विरुद्ध आचरण करना स्वीकार न किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवन-निर्वाह की समस्या—

मानसिक आवेश और युवावस्था के उत्साह के फलस्वरूप इन्होंने पति से तलाक मंजूर कर ली, पर जब जीवन-निर्वाह की समस्या सामने आई तो दिमाग चक्कर खाने लगा। अदालत ने छोटी लड़की को इनके साथ रहने का आदेश दे दिया था। अब अपनी बुड्ढी माता का और छोटी बच्ची का खर्च किस प्रकार चलायें ? यह एक बड़ी कठिन समस्या थी।

अब ये कोई नौकरी तलाश करने लगीं। इसमें इनको कितनी दौड़-धूप करनी पड़ी, तकलीफ उठानी पड़ी और मान-अपमान सहने पड़े उन सबका वर्णन यहाँ कर सकना सम्भव नहीं। कई महीने तो सप्ताह में केवल तीन-चार रुपया का काम करके ही गुजारा करना पड़ा। फिर एक बड़े पादरी के घर में भोजन बनाने का काम मिल गया, पर वेतन में दोनों ही समय का भोजन और रहने का स्थान दिया गया। कुछ समय बाद पादरी का लड़का बीमार हो गया तो इनको खाना बनाने से हटा कर उसकी देखभाल करने को नियुक्त कर दिया गया। एक बच्चा ठीक हुआ तो दूसरे को ज्वर आ गया। उसकी देखभाल भी ये करने लगी। इन्होंने परिश्रम करके दोनों की प्राण रक्षा की।

एक साल बाद इनकी माता बीमार पड़ी पर गरीबी के कारण इलाज की ठीक व्यवस्था नहीं हो सकी। मई १८७४ में उसका देहान्त हो गया और श्रीमती बेसेंट का एक मात्र सहारा जाता रहा। अब इनका आधार छोटी बच्ची मैवेल पर ही था। इस समय दरिद्रता का संकट भी बहुत बढ़ गया था। मकान का किराया काफी चढ़ गया था, इसलिये ये केवल एक बार भोजन करके उसे चुकाने का प्रयत्न करती थीं।

सामयिक पत्रों में लेखन-कार्य—

श्रीमती बेसेंट सामयिक पत्रों में अपने वैवाहिक-जीवन से ही लिखने लग गई थीं। सबसे पहले इनकी एक छोटी-सी कहानी 'फैमिली-हेटल्ड' नामक पत्र में छपी, कुछ समय बाद उसका पत्र आया जिसमें से लेख के पारिश्रमिक का ३० शिलिङ्ग (२१ रुपया) का चैन निकला। एक लेखक की हैसियत से यह इनकी पहली कमाई थी। इसके बाद इन्होंने और भी कई छोटी-छोटी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुन्दर कहानियाँ लिखकर उस अखबार में भेजीं और वे सब छप गई । एक उपन्यास भी लिखकर भेजा, पर वह यह कह कर लौटा दिया गया कि इसमें राजनीति की चर्चा बहुत अधिक है ।

अब जीविका की समस्या उपस्थित होने पर उन्होंने फिर लिखने की तरफ ध्यान दिया और मि० स्काट नामक सज्जन के आश्रय से कई लेख लिखे, जिसमें से प्रत्येक के लिये २१ रुपये के हिसाब से पारिश्रमिक मिल गया। श्रीमती स्काट भी इनका बहुत ख्याल रखती थीं और जब बहुत कठिन अवस्था आती थी तब वे उनको भोजन भी करा देतीं थीं। कई साधारण अवस्थाओं की पूर्ति के लिये इन्होंने अपने आभूषण और बढ़िया कपड़े पहले ही बेच दिये थे । अब पेट भरने का एक मात्र साधन लेखन कार्य ही था। पर इस क्षेत्र में नवीन होने के कारण सदैव उसमें सफलता नहीं मिलती थी। तब भी यह साहस करके अपने मार्ग पर दृढ़ रही और इस स्थिति को अपनी एक परीक्षा समझ कर परिश्रम करके और कठिनाइयाँ सहन करके अपने सिद्धान्तों के अनुसार अग्रसर होती रहीं । श्रीमती बेसेंट की जीवन घटनायें इस दृष्टि से बड़ी शिक्षा-प्रद और रोचक हैं कि स्वावलम्बी व्यक्ति किस प्रकार आपत्तियों का मुकाबला करके बडी से बड़ी सफलता प्राप्त कर सकता है। क्या यह बात कम प्रेरणाप्रद है कि जिस श्रीमती बेसेंट को लेखन कार्य से सूखी रोटी खाने लायक भी आमदनी नहीं होती थी फिर उन्होंने इसी के द्वारा लाखों रुपया कमाये और सैकड़ों अन्य व्यक्तियों की रचनाओं को भी प्रकाशित करके उनको साहित्य-क्षेत्र में ठहर सकने में हर तरह से सहायता दी ।

श्री ब्रैडला से भेंट और मजदूर आन्दोलन---

सन् १८७४ में ही इनकी भेंट इङ्गलैंड के प्रसिद्ध अनीश्वरवादी प्रचारक चार्ल्स ब्रैडला से हो गई। ब्रैडला अपने स्वतन्त्र विचारों और ईसाई धर्म का जोरों से खण्डन करते रहने के कारण बहुत बदनाम हो चुके थे। वे किसी प्राचीन रूढ़ि और परम्परा को नहीं मनाते थे, और प्रत्येक सिद्धान्त को तर्क और विज्ञान की कसौटी पर कस कर स्वीकार करते थे। इसलिए कट्टर ईसाई उनसे बहुत अधिक विरोध करते थे और उन पर तरह-तरह के झूँठे-सच्चे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आरोप लगा कर हमेशा उन्हें जनता की निगाह में गिराने की चेष्टा किया करते थे। जब श्रीमती बेसेण्ट ने उनको अपने घर पर बुलाया तो उन्होंने साफ कह दिया कि खूब सोच समझकर ऐसा काम करना। मैं तो काँटों पर चलने वाला आदमी हूँ। स्वयं मेरे भाई-बन्धु मुझसे घृणा करते हैं और जनता में भी मैं तरह-तरह से बदनाम किया जाता हूँ। मेरे साथ रहने से तुम्हारे विषय में भी लोग हर तरह की अफवाहें उड़ाने लगेंगे और अपेक्षा करेंगे। बाद में इससे घबड़ा कर तुम पछताने लगो या मुझे दोष देने लगो तो यह उचित नहीं। इस तरह के मार्ग पर चलने के पहले ही उसकी समस्त कठिनाइयों को समझ लेना चाहिये और यह भी विचार लेना चाहिए कि इतना आगे बढ़ सकने की शक्ति हमारे भीतर है या नहीं ?

पर श्रीमती बेसेण्ट भी कुछ ऐसी ही प्रकृति की थी। केवल सिद्धान्त के कारण उन्होंने पतिगृह का त्याग करके रोटी-कपड़े के लिये भी बहुत अधिक कष्ट सहन किये थे। अपनी और अनेक लोगों की दुर्दशा तथा अकारण सहन किये जाने वाले अन्यायों को देखकर उनका ईश्वर और धर्म पर से विश्वास बिल्कुल हट गया था। इसलिये उनको श्री ब्रैडला की बातों से किसी प्रकार का भय नहीं जान पड़ा और वे भी उनके साथ स्वतन्त्र विचारो का प्रचार करने में सम्मिलित हो गई।

श्री ब्रैडला ने इनको अपने सामयिक पत्र 'नेशनल रिफार्मर' में कुछ लिखने का काम दे दिया। यह गरीबों के लिये आन्दोलन करने वाला पत्र स्वयं भी बहुत गरीब था इसलिये श्रीमती बेसेण्ट को उससे थोड़ा सा ही पारिश्रमिक मिलता था। थोड़ा लेखन कार्य ये श्री स्काट के सहयोग से करती थीं। दोनों की आमदनी से किसी तरह स्वावलम्बी जीवन की गाड़ी चलती चली जाती थी।

बारह वर्ष तक स्वतन्त्र विचारों के आन्दोलन के सम्बन्ध में इन्होंने बहुत काम किया। पादरी और पुराने विचारों के लोग इनका हर तरह से विरोध किया करते थे, खरी-खोटी सुनाया करते थे, पर नये विचारों की लहर उनके रोके न रुक सकी। परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे सर्व साधारण पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसका प्रभाव पड़ने लगा और उनकी धर्म सम्बन्धी धारणाओं में पहले की अपेक्षा बहुत परिवर्तन हो गया। अब वे धार्मिक पाखण्ड और ढोंग के बजाय चरित्र और नैतिकता की वृद्धि करने वाले सिद्धान्तों का आदर करने लगे थे। लाचार होकर धर्माध्यक्षों और धर्म-प्रचारकों को भी बदलना पड़ा और इङ्गलैण्ड का ईसाई धर्म बहुत कुछ निर्मल हो गया और अन्ध-विश्वास घट गया। इस सम्बन्ध में अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए श्रीमती बेसेन्ट ने लिखा था—"जबर्दस्ती कानूनी अथवा सामाजिक दण्ड का भय दिखाकर धर्म में विश्वास पैदा करने की चेष्टा करना निरर्थक है। विश्वास अपने आप असलियत को देखकर उत्पन्न होता है, दण्ड से नहीं। ज्यादती और जुल्म करने से तो दृढ़ इच्छा शक्ति वाले पहले अधिक धर्म-विरोधी बन जाते हैं और जो कमजोर होते हैं वे पाखण्डी हो जाते हैं। मुझे एक भी ऐसा उदाहरण नहीं मिला कि जोर जबर्दस्ती से कभी कोई ईमानदार विश्वास करने वाला बन सका हो।"

राजनीति में भी स्वतन्त्र विचारों का प्रचार—

अभी तक श्रीमती बेसेन्ट का अधिक ध्यान धार्मिक मामलों की तरफ था। पर इङ्गलैण्ड में धर्म और राजनीति में विशेष सम्बन्ध है। वहाँ उस समय तक राजा ही धर्म का भी सबसे बड़ा संरक्षक और सहायक माना जाता था। इसलिए स्वभावतः इनको राजनीतिक विषयों पर भी अपनी सम्पत्ति प्रकट करनी पड़ी और आवश्यकता होने पर उसकी बुराइयों के विरुद्ध प्रचार करना पड़ा। इसमें ईसाई धार्मिक जगत के साथ ही सरकार की दृष्टि भी इन पर हो गई।

इन्होंने देखा कि अँगरेजी साम्राज्य जितना बढ़ता जाता है उतना ही प्राचीन देशों और उपनिवेशों के साथ उसका व्यवहार कठोरता और दमन का होता जाता है। आयरलैण्ड के स्वाधीनता आन्दोलन को तो वह खूब कुचल ही रहा था और उसके कारण श्रीमती बेसेण्ट के मन में पहले से ही विद्रोह की भावना उत्पन्न हो चुकी थी। अफगानिस्तान और मिश्र जैसे स्वाधीन कहे जाने वाले देशों में भी वह अपना प्रभाव कायम रखने के लिये समय-समय पर बल प्रयोग करता रहता था। दक्षिण अफ्रीका से भारतीय तथा स्थानीय निवासियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर मनमाने अत्याचार किये जा रहे थे। भारतवर्ष की पराधीनता की जंजीरें बराबर मजबूत की जा रही थीं और यहाँ की जनता विवश और निराश होती जाती थी।

स्वयं इंगलैन्ड में भी मजदूरों तथा अन्य गरीब श्रेणी के लोगों की दशा बड़ी दयनीय थी। सरकार और बड़े लोगों की शान-शौकत बढ़ती जाती थी, उनका व्यय सामान्य जनता पर टैक्स बढ़ाकर पूरा किया जाता था। अमीरों की शासन सभा (हाउस आफ लार्डस) सुधार के प्रत्येक काम में भरसक रोड़ा अटकाती थी। शिक्षा और गरीबों की आर्थिक सुधार सम्बन्धी योजनाओं को भूल कर युद्धों की तैयारी में करोड़ों रुपया लगाया जा रहा था। जो कोई इसके विरुद्ध आवाज उठाता था तो वह सरकार और समाज का द्रोही बतलाया जाता था।

इन विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने अपनी समस्त शक्ति इन अन्यायों का विरोध करने में लगा दी। जगह-जगह सभायें करके वे सरकार के दोषों का पर्दाफाश करने लगी। ईश्वर तथा धर्म के नाम पर ढोंग फैलाने वालों का खन्डन वे पहले से ही कर रही थीं। इस प्रकार इस जमाने में सरकार और ईसाई धर्म को अकाट्य मानने वाले मूढ़ व्यक्तियों की निगाह में तो वे समाज के ऊपर एक काले धब्बे की तरह थीं। अन्ध-विश्वासी समाज में उनकी निन्दा का बाजार गर्म हो उठा और उनके नाम हर तरह-तरह के लाँछन लगाने लगे। पर श्रीमती बेसेन्ट इन बातों की तरफ कान और आँखें बन्द करके अपने मार्ग पर चलती गई। जो लोग किन्ही सिद्धान्तों के लिये शहीद होने का निश्चय कर लेते हैं वे ऐसी लोक-चर्चा, निन्दा-कुत्सा की पर्वाह कब करते हैं?

श्री ब्रैडला का चुनाव संघर्ष—

उस समय उच्च वर्ग के 'सभ्य' और 'विद्वान्' कहलाने वाले श्रीमती बेसेन्ट के सहायक श्री ब्रैडला की कितनी भी निन्दा क्यों न करते हों पर गरीब लोगों की बहुत बड़ी संख्या उनकी समर्थक थी। वे गरीबों के सच्चे मित्र थे और जहाँ कहीं अन्याय होता देखते थे, वहीं उसका विरोध करते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गरीब लोगों को तो वे अपने आत्मीय की तरह समझते थे और तन-मन-धन से जिस प्रकार हो सकता उनकी सहायता करने को तत्पर रहते थे। केवल इंगलैन्ड ही नहीं संसार भर के पीड़ितों को अपना बन्धु मानते थे और जिस प्रकार बन पड़ता उनकी सहायता करते थे। भारतवर्ष पर भी उस समय अँगरेजों का दमन चक्र चल रहा था और हर प्रकार से भारतीय जनता का शोषण किया जाता था। श्री ब्रैडला ने पार्लियामेंट में भारतवर्ष का पक्ष लेकर सरकार के अनुचित कार्यों की तीव्र आलोचना की जिससे बड़ी खलबली मची। सन् १८९० में उनको निमन्त्रित करके बुलाया गया और उन्होंने भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस में इस देश की माँगों और अधिकारों का डंके की चोट पर समर्थन किया। उस अवसर पर हिन्दी के देशभक्त कवि स्वर्गीय प्रतापनारायण मिश्र ने उनके स्वागत में एक बड़ी कविता पढ़कर सुनाई थी जिसमें अनेक उपरोक्त गुणों का परिचय मिलता है। उसकी कुछ पंक्तियाँ नीचे दी जाती हैं—

स्वागत श्रीयुत ब्रैडला ! प्रेम प्रतिष्ठा पात्र।
पलक पांवड़े करि रहे तव हित देशी मात्र॥
स्वागत ! स्वागत ! स्वागत ! श्रीभारत हितकारी।
आवहु निश्रमन्याय निरत नित सत पथ धारी॥
यदपि अनीश्वरवाद दोष सब तुमहिं लगावें।
पै प्यारे तव मुख्य मर्म विरले कोउ पावें॥
लाखन जन मुखते नित ईश्वर—ईश्वर करहीं।
पै स्वारथ सनि पर—सरवस कहें हरतहि रहहीं॥
तुम सम पर-दुःख देख द्रवहिं सोई हरि कहें प्यारे।
का जानहि या परम धरम लघु मति मतिवारे॥
जिन छलियन के हाथ सुमिरिनी बगल कतरनी।
कछु न हानि जो शतधा निन्दहि तव करनी॥
पै हमरे विश्वास माँहि तुम परम सुजाना।
दीन दया विस्तरन वपुष श्री बुध भगवाना॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वास्तव में श्री ब्रैडला उन व्यक्तियों में से थे जो धर्म का आडम्बर न करके उसके सार को ग्रहण करते हैं। यद्यपि वे गिर्जाघर या मन्दिर-मस्जिद में जाकर ईश्वर को नहीं पुकारते पर जिन दीन-दुखियों के भीतर आत्मा रूपी परमात्मा को व्यथित होता देखते हैं वहीं उसकी सेवा-सहायता को दौड़ते हैं। इसके विपरीत जो मुकुट-तिलकधारी ईश्वर की पूजा के लिये बड़े आयोजन, उत्सव आदि करते हैं वे उल्टा उन दीन जनों को चूसते हैं, ठोकरें लगाते हैं। उनको थोड़े से धर्म व्यवसाइयों के अतिरिक्त और कौन 'धर्म-सूरत' कहेगा ?

श्री ब्रैडला की जन-प्रियता की परीक्षा उस समय हुई जब एक बार पार्लियामेंट के 'लिबरल' (उदार) और 'कंजरवेटिव' (अनुदार) दोनों दलों ने मिलकर तरह-तरह की चालें चल कर झूँठे आक्षेप लगाकर श्री ब्रैडला को चुनाव में हरा दिया। इससे वहाँ की गरीब जनता इतनी उत्तेजित हो गई कि उसने विरोधी दल वालों के मकानों पर हमला कर दिया। खून-खराबी को रोकने के लिये श्री ब्रैडला बहुत थके होने पर भी वहाँ आये और अपने अनुयायिओं को बहुत-डाँट-डपट कर बदमाशी करने से रोका। पर उसी रात को अमरीका के लिए रवाना हो गये इसके पश्चात् क्रोधित जनता ने 'मरकरी' नामक एक लिबटल पार्टी के समाचार पत्र के दफ्तर पर हमला करके इसे पूर्णतः नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। इस पत्र में श्री ब्रैडला के विरुद्ध बड़ा जहर उगला जाता था और उन पर ऐसे जघन्य आरोप लगाये जाते थे जिन्हें पढ़कर एक निष्पक्ष व्यक्ति को भी रोष आ जाता था, इस घटना के समय श्रीमती बेसेन्ट भी वहाँ मौजूद थी। उन्होंने यही पहला बलवा अपनी आँखों से देखा और अनुभव किया कि प्रजातन्त्र के नाम पर होने वाले चुनावों में कितनी उत्तेजना और दलबन्दी हो सकती हैं।

जब दूसरी बार सन् १८८० में ही ब्रैडला मेम्बर चुन लिये गये तो जनता प्रसन्नता के मारे नाचने लगी। पर अमीर लोग फिर भी कोई ऐसी चाल सोच रहे थे जिससे इस 'अनीश्वरवादी' और धनी लोगों के शत्रु को जड़ से उखाड़ डाला जाय। उनको ऐसा मौका शीघ्र ही मिल गया 'पार्लियामेंट' की सदस्यता ग्रहण करते समय ईश्वर के नाम पर शपथ खानी पड़ती थी। पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रैडला ईश्वर के नाम पर शपथ खाने को तैयार न हुये। वे अदालत में भी ऐसा ही करते थे और केवल प्रतिज्ञा कर लेते थे। पर यहाँ उनके विरोधियों ने इस बहाने से लाभ उठाकर ऐसी कानूनी अड़चनें डालीं कि श्री ब्रैडला को सारजैंट द्वारा बाहर निकलवा दिया और दो दिन तक कैद रखा। यद्यपि इस अन्याय के विरुद्ध कानून बन चुका था, पर उनके विरोधियों ने, जो बड़े-बड़े लार्ड थे धींगाधींगी करके उनके चुनाव को रद्द कर ही दिया। फिर दुबारा चुनाव कराया गया, पर उसमें ब्रैडला को पहले से भी ज्यादा 'वोट' मिले। अन्त में बड़े संघर्ष के पश्चात् उनको पार्लियामेंट में स्थान मिल सका। वहाँ भी वे गरीब और अन्याय पीड़ितों के पक्ष में ही भाषण करते रहते थे। भारतवर्ष को उचित अधिकार दिये जाने के लिये इन्होंने वहाँ बहुत प्रयत्न किया।

सार्वजनिक क्षेत्र में श्री ब्रैडला के साथ कार्य करने से श्रीमती बेसेन्ट को भी लोगों के द्वारा समय-समय पर अनादर, अपमान, अप्रतिष्ठा, का व्यवहार सहन करना पड़ा। यह विरोध इतना अधिक बढ़ गया था कि अनेक बार प्राणों पर खतरा जान पड़ता था। स्त्री होने के कारण इनको और भी कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ती थीं। एक बार ये रेलगाड़ी में यात्रा कर रही थीं इनको अकेला देख कर एक शराबी डब्बे में घुस आया। उसने पहले तो खिड़की बन्द कर दी और फिर हँसता हुआ इनकी ओर बढ़ा। इस विपत्ति को देखकर ये बहुत घबड़ाईं और कोई उपाय न देखकर एक छोटा चाकू, जो इनके पास था, खोलकर हाथ में ले लिया। इतने में सिगनल न होने से रेल खड़ी हो गई। इन्होंने गार्ड से सारा हाल कहा और उसी समय उस डब्बे से उतर कर दूसरे में चली गईं।

मैडम ब्लवटस्की से भेंट—

कुछ समय पश्चात् संयोगवश इनके विचारों में परिवर्तन होने लगा। घटना इस प्रकार हुई कि इनके पास एक पुस्तक समालोचनार्थ आदि जिसमें अध्यात्म, सिद्धान्त और 'थियोसोफी' समाज का वर्णन था। 'थियोसोफी' का अर्थ है 'दैवीज्ञान'। इस पुस्तक में बतलाया गया था कि "मनुष्य परमात्मा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का अंश है और उसके भीतर एक दैवी-तत्त्व विद्यमान है, जो लाखों जोनियों में अनुभव प्राप्त करके और विकसित होकर वर्तमान अवस्था को पहुंची है। यह तत्व भौतिक पदार्थों से अलग है और इसी की वृद्धि करते-करते मनुष्य एक दिन नर से नारायण बन जाता है। हमारा यह पंच भौतिक शरीर भी उसी तत्त्व के विकास के अनुसार आकृति और गुण ग्रहण करता है। जिस प्रकार चित्रकार पहले अपने दिमाग में किसी चित्र की रूप-रेखा खींच कर फिर उसे कागज पर उतार लेता है, इसी प्रकार हमारी आत्मा के जैसे विचार, भावनयें, होती हैं वैसा ही शरीर भी उसे मिल जाता है। जब किसी प्राणी की पर्याप्त उन्नति हो जाती है तभी उसको मनुष्य योनि प्राप्त होती है।

दूसरी बात जो इस पुस्तक में श्रीमती बेसेण्ट को विशेष महत्त्व की जान पड़ी वह थी ब्रह्मचर्य। अभी तक वह इसे शारीरिक दृष्टि से ही मानती थी। पर इस पुस्तक में ब्रह्मचर्य युक्त जीवन पर एक नया प्रकाश डाला गया था। उसमें कहा गया था कि यदि किसी व्यक्ति में इसका अभाव है तो इसका कारण यही है कि पिछले जन्म में उसके विचार पशुतुल्य थे और इस जन्म में भी उनके शेष रह जाने से उसमें कामुकता की अधिकता पाई जाती है। भोग के लिये उसने मानो अपने विवेक को बेच दिया है और संसार की मुख्य-मुख्य खराबियों की यही जड़ हैं। इस दैवी गुण को खो देना मनुष्य के लिये महान् कष्टों का कारण होता है। इस कष्ट को मिटाने के लिये नकली उपायों का आश्रय लेना अनुचित है, इसका वास्तविक उपाय आत्मा को शुद्ध कर देना ही है। हमको समझ लेना चाहिये कि वास्तविक चिकित्सा मन की होनी चाहिये न कि शरीर की।'

श्रीमती बेसेन्ट को ये बातें बहुत सारयुक्त जान पड़ीं जिससे उनके विचारों में बड़ा परिवर्तन हो गया। वे अभी तक 'माल्थस-संघ नामक संतान-निग्रह का प्रचार करने वाली संस्था की सदस्य थीं और इसके कृत्रिम उपायों के सम्बन्ध में इन्होंने एक पुस्तक भी लिखी थी। पर अब मैडम ब्लैवटस्की के आध्यात्मिक उपदेशों को पढ़ कर इन्होंने इन सब कार्यों को त्याग दिया। उस पुस्तक के दूसरे संस्करण को प्रकाशित करने का अधिकार प्राप्त करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के लिये कई प्रकाशक इनको हजारों रुपये दे रहे थे पर अब जब इन्होंने उस रास्ते को ही गलत समझ लिया तो उसके प्रचार में कैसे सहयोग दे सकती थी ?

मजदूर आन्दोलन में सक्रिय भाग—

उस समय इंगलैंड के मजदूरों की हालत बहुत खराब थी। पूँजीवाद उस समय यौवनावस्था पर था और कारखाने वाले अधिक से अधिक माल बना कर संसार के बाजारों पर अपना कब्जा करने की धुन में बहुत अधिक स्वार्थपरता से काम ले रहे थे। आज भारतवर्ष में भी नौ-दस घन्टे से अधिक किसी मजदूर से काम लेने का नियम नहीं हैं, पर उस समय इंगलैंड में उनसे १४ घन्टे काम कराया जाता था और इसके बदले में जो मजदूरी मिलती थी उसमें पेट भर भोजन भी मुश्किल से मिल पाता था।

इस अवस्था को देखकर अनेक न्यायपरायण और मानवतावादी व्यक्ति इसका विरोध करने वाले निकल आये थे। उनका कहना था कि सब अमीर लोग मजदूरों का खून चूसकर मौज उड़ाते हैं और करोड़पति बनते जाते हैं, तो मजदूर भी संगठन करके अपने अधिकार प्राप्त करने की चेष्टा क्यों न करे ? उनको आन्दोलन करके राज्य से अपनी रक्षा और न्यायोचित माँगों की पूर्ति कराने का प्रयत्न करना चाहिये।

जस्ता के कारखाने में स्त्री-मजदूरों की हालत बड़ी दयनीय थी। उनको वहाँ चौदह घन्टे तक कठिन काम करके थक कर चकनाचूर हो जाना पड़ता था। फिर वहां से आकर घर का काम भी करना पड़ता था। वे बड़ी दुःखी थीं और कारखाने के प्रबन्धकर्त्ताओं के व्यवहार की शिकायत करती थीं। उनको सलाह दी गई कि अपना एक संगठन बनाकर एक साथ अपनी मांग मालिकों के सामने रखनी चाहिये। अगर वे उस पर ध्यान न दें तो हड़ताल कर देनी चाहिये। जब उनका नुकसान होगा तो झखमार कर मजदूरों की माँगे स्वीकार करेंगे।

इस प्रकार उदार और मानवीय अधिकारों से प्रेरित विचार उस समय अनेक न्यायपरायण और समतावादी सज्जन प्रकट करने लगे थे। इनमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



हाइन्डमैन, बर्नार्डशा, विलियम मारिस आदि जैसे महानुभाव थे जिनका नाम आज समाजवाद की जड़ जमाने वालों के रूप में लिया जाता है। इन्होंने इङ्ग-लैंड में 'फेबियन सोसायटी' नाम की संस्था खोल रखी थी जो जनता में साम्यवादी सिद्धान्तों का प्रचार करती थी और मजदूरों में आन्दोलन करती रहती थी।

श्रीमती बेसेंट भी गरीब मजदूरों की दुर्दशा को देखकर बड़ी दुःखी होती थीं और उनके लिये श्री ब्रैडला के साथ इस तरह का प्रयत्न करत रहती थीं। उन्होंने जब 'फैबियन सोसायटी' के कामों को देखा तो उसको मजदूरों के लिए अधिक हितकारी और दृढ़ता पूर्वक काम करने वाला पाया। यद्यपि श्री ब्रैडला और उनके स्वतन्त्र दल वाले भी मजदूरों के हितैषी थे और समाज सेवा के रूप में उनकी अनेक प्रकार से सहायता करते रहते, पर 'फेबियन सोसाइटी' वाले सोशलिस्ट (समाजवादी) इस कार्य को एक राजनैतिक आन्दोलन के रूप मे करते थे और उनका मुख्य 'शस्त्र' हड़ताल था। इन लोगों में कई अराजकतावादी भी थे, जो मौजूदा सरकार को बिल्कुल हटा कर गरीब और अमीरों को समान अधिकार दिये जाने का प्रतिपादन करते थे। इस प्रकार 'स्वतन्त्र दल' वाले और 'सोशलिस्ट' दोनों ही मदूजरों की दशा सुधारने के लिए प्रयत्नशील थे, पर कार्य-प्रणाली की भिन्नता के कारण एक दूसरे के विरोधी बन गये थे।

सन् १८८३ में श्रीमती बेसेण्ट का इस आन्दोलन से विशेष रूप से परिचय हुआ और उन्होंने निश्चय किया कि इसमें सम्मिलित होकर गरीबों की दशा सुधारने का प्रयत्न अधिक जोरों से करना चाहिए। पर अब तक ये श्री ब्रैडला के साथ काम कर रही थीं, वे 'सोशलिस्ट' नहीं थे, वरन् अनेक बातों में उनका साम्यवादियों के साथ बहुत कुछ मतभेद था, इसलिये सोशलिस्टों के साथ मिल कर काम करने पर श्री ब्रैडला को छोड़ना पड़ता था। आरंभ में तो इनको यह परिस्थिति बड़ी कष्टकर जान पड़ी, पर गरीबों का इनके हृदय में इतना अधिक स्थान था कि अन्त में ये श्री ब्रैडला से पृथक् होने को भी तैयार हो गयीं। 'फेबियन समाज' में जिस मनोभाव को लेकर आयीं उसका वर्णन करते हुए उन्होंने स्वयं एक स्थान पर लिखा है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"औरों के समान मैं भी इन दुर्दशाग्रस्त और उपेक्षित मजदूरों की सहायता करने लगी। इन अभागों के नाले—नालियों के समान गन्दे घरों में घुसकर मैं सोचती कि क्या इस रोग की कोई औषधि नहीं है? क्या यह गरीब-अमीर का भेद सदा ऐसा ही बना रहेगा? मेरा विश्वास था कि ऐसा हर्गिज नहीं होना चाहिये। दरिद्रता का मुख्य कारण अज्ञान और दूषित सामाजिक सङ्गठन है। यदि मजदूरों के बच्चों को रहने के लिये अच्छा स्थान मिले, शारीरिक व्यायाम, खेल-कूद, पढ़ने-लिखने की ठीक व्यवस्था की जाय, तो आगे चल कर ये भी सभ्य और सुशिक्षित नागरिक बन सकते हैं। पर इसको अपने माता-पिता के साथ ऐसी अत्यन्त गरीबी और गन्दगी में रहना पड़ता है कि उन्नति के सब रास्ते रुक जाते हैं और जो थोड़ी बहुत शिक्षायें प्राप्त कर लेते हैं वह भी प्रभावहीन हो जाती है।"

'पर फेबियन सोसाइटी' के आन्दोलन का सफल होना भी सहज न था। उस समय सरकार में पूरी तरह अमीरों का बोलबाला था और सारा संसार उनकी मुट्ठी में रहता था इसलिये मजदूर—आन्दोलन में भाग लेने वाले राज्यद्रोही समझे जाते थे और उनके साथ बड़ा अनादरपूर्ण व्यवहार किया जाता था।

फिर भी श्रीमती बेसेंट ने इस नये सङ्गठन में शामिल होकर जोर-शोर से मजदूरों में काम करना शुरू किया। इनको आन्दोलन सम्बन्धी अनुभव पहले से ही था, इसलिए सभा-समाजों में इनके भाषण का प्रभाव बहुत अच्छा पड़ता था। उन्होंने मजदूरों को समझाया कि वे पार्लियामेंट के चुनावों में अपने साथ सहानुभूति रखने वाले व्यक्तियों को ही 'वोट' दें। जब कभी ऐसा अवसर आवे तो भाषणकर्ता से यही प्रश्न करें कि वह गरीबों की दशा सुधारने को क्या काम करेंगे? मजदूरों को अपने हितैषियोंको ही पार्लियामेंट में अधिकाधिक संख्या में भेजना चाहिए जिससे वहाँ वे उनकी दशा में सुधार करने वाले कानून बनवा सकें।

उन दिनों रूस में भी मजदूर—आन्दोलन बहुत जोरों पर था और वहाँ के निरंकुश सरकार न्याय की माँग करने वालों का घोर दमन कर रही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

थी। रूस में राजनीतिक कैदियों पर राक्षसी अत्याचार किये जाते थे और उन को साइबेरिया के रेगिस्तान में ठण्ड में गलने के लिये भेज दिया जाता था। बहुतों को देश निकाला भी दे दिया गया था। इन अत्याचारों का समाचार फैलने पर इंगलैण्ड में सहायता के लिये एक कमेटी बनाई गई। इस प्रकार के आन्दोलन में भाग लेना उस समय बड़े साहस का काम था। यह सभा श्रीमती बेसेण्ट के मकान पर ही की गई।

मजदूर आन्दोलन में सहायता देने के लिये श्रीमती बेसेण्ट ने 'अबर कार्नर' नाम का अखबार निकालना आरम्भ किया जिसमें कारखाने वालों के अन्यायपूर्ण कार्यों और सरकारी दमन के समाचार रहते थे। इसमें इन्होंने मालिकों की दुरभिसंधियों का भंडाफोड़ करते हुए बतलाया कि "कारखाने वाले जिस प्रकार बन पड़ता है मजदूरों की मजदूरी घटाने की चेष्टा करते रहते हैं। जो कोई उनका विरोध करने की हिम्मत करता है उसे उसी समय निकाल दिया जाता है। इससे देश मे बेकारों की संख्या बढ़ रही है और देश भर में अशान्ति का वातावरण तैयार हो रहा है।" उस समय एक मजदूर ने निराशा के भाव से इनसे कहा था—"अब हम इस दशा को सहन नहीं कर सकते। हम काम करते हुये भूखों मरते ही हैं, तो बिना काम किये ही क्यों न भूखों मर जायें ?"

सरकार भी इस काम में मालिकों का साथ देती थी, क्योंकि उस समय अमीरों की ही सरकार थी। 'फेबियन सोसायटी' इस सम्बन्ध में मजदूरों में पहले से ही आन्दोलन कर रही थी। परिणाम यह हुआ कि जब मजदूरों में ज्यादा जोश बढ़ गया तो पुलिस ने सोशलिस्टों की सभाओं को सार्वजनिक स्थानों में होना रोक दिया। ऐसी सभाओं में पुलिस डन्डे का प्रयोग करके दर्शकों को तितर-बितर कर देती थी।

इस अवसर पर श्रीमती बेसेण्ट अद्‌भुत साहस का परिचय दे रही थीं। सरकार और 'स्वतन्त्र विचार-दल' दोनों उनके विरोधी हो रहे थे। फिर भी वे निरन्तर मजदूर-संगठन का काम बढ़ाती रहीं। उन्होंने प्रत्येक शहर के कुछ लोगों की एक ऐसी नामावली तैयार की जिनका काम गिरफ्तार होने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाले मजदूर-नेताओं को जमानत देकर छुड़ा लाना था। इसके साथ ही मुकदमा लड़ने के लिये एक दूसरी कमेटी बनाई गई। इस प्रकार की व्यवस्था हो जाने से मजदूरों में तेजी के साथ आन्दोलन बढ़ने लगा।

इसी वर्ष [सन् १८८७] लन्दन में 'खूनी रविवार' की प्रसिद्ध घटना हुई। इग्लैण्ड के गृह-विभाग के मन्त्री के यह आश्वासन देने पर कि मजदूर खुले स्थानों में सभीकर सकते है। १३ नवम्बर को ट्रैफलगार स्क्वायरमें एक बहुत बड़ी सभाका आयोजन किया गया। यह निश्चय किया गया कि शहरकी सभी मजदूर संस्थायें अपना अलग-अलग जलूस बनाकर सभा स्थल पर आवें और अगर पुलिस इस कार्य में हस्तक्षेप करे तो वे उसके विरोध में सत्याग्रह करें। पर जब सभा स्थल पर भीड़ इकट्ठी हो गई तो एकाएक पुलिस के घुड़सवारों ने हमला कर दिया। अनेक व्यक्ति घोड़ों से कुचले और भालों से मारे गये। यह देखकर श्रीमती बेसेण्ट ने लोगों को लौट जाने की घोषणा कर दी। तो भी कितने ही लोग मारे गये और सैकड़ों घायल हो गये।

इस घटना का सभी न्यायशीश लोगों ने 'जनता के साधारण न्याय' का युद्ध बतलाया और चारों तरफ सरकार और पुलिस की निन्दा होने लगी। जनता ने पुलिस का बहिष्कार करना आरम्भ कर दिया। पुलिस भी इनके साहस को देखकर दङ्ग रह गई। अब सरकार को भी अनुभव होने लगा कि यदि यही दशा अधिक समय तक बनी रही तो स्थिति नियंत्रण से बाहर हो जायगी। इसलिये कुछ दमदिलासा की बातें कह कर उस घटना के जिम्मेदार पुलिस अफसर का तबादला कर दिया गया।

अब 'फेबियन-समाज' ने अपने आन्दोलन को क्रियात्मक रूप देना आरम्भ कर दिया। उसकी एक सदस्या ने अपने भाषण में यह सुझाव पेश किया कि "हम सब को उन्हीं दुकानों से माल खरीदना चाहिये जहाँ मजदूरों को उचित वेतन देने वाले कारखानों का ही बेचा जाता हो।" इसके पश्चात् दूसरे वक्ता ने बतलाया कि दियासलाई बनाने वाले 'ब्रिवोट एण्ड में' कारखाने में इतना अधिक मुनाफा होता है कि उसके ७५ रु० का शेयर इस समय २७० रु० का मिल रहा है। पर मजदूरों की ऐसी खराब हालत है कि एक मजदूर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लड़की को सप्ताह में ३ रु० दिया जाता है जिसमें से १।। रु० कमरे का किराया दे देना पड़ता है। शेष डेढ़ रुपये में वह सात दिन कैसे खाती-पीती होगी यह विचारणीय विषय है ?

इन सब बातों को श्रीमती बेसेण्ट ने 'लन्दन में सफेद गुलामी' शीर्षक लेख में प्रकाशित कर दिया और लोगों से इस कम्पनी की दियासलाइयों को काम न लाने की अपील की। इस पर कम्पनी ने मानहानि का मुकदमा चलाने की धमकी दी, पर श्रीमती बेसेण्ट ने इसकी कुछ परवाह नहीं की और अपने आन्दोलन को बराबर चलाती रही। इस बीच में उस कारखाने की तीन मजदूर औरतों ने आकर खबर दी कि "हम से कहा जाता है कि तुम एक कागज पर दस्तखत करदो कि हमारी अवस्था सन्तोष जनक है, हमको कोई कष्ट नहीं है. श्रीमती बेसेण्ट की बातें झूठी हैं। आपने हमारे हित के लिये आवाज उठाई है, हम आपके विषय में झूँठी बात कैसे कह सकती हैं ? कम्पनी वाले हमको इसके लिये बार-बार परेशान कर रहे थे। जब हमने उनकी बात मानने से इनकार कर दिया तो उन्होंने हमारी मुखिया को बरखास्त कर दिया। इस घटना के बाद यह आन्दोलन ऐसे जोर से भड़का कि कम्पनी की १४०० मजदूर स्त्रियों ने एक साथ हड़ताल कर दी।

इस घटना को लेकर श्रीमती बेसेण्ट ने ऐसा धुआधार आन्दोलन आरम्भ किया कि हड़तालियों की हर तरफ से सहायता की जाने लगी। श्री ब्रडला ने भी इस सम्बन्ध में पार्लियामेंट में अनेक प्रश्न किये। हड़तालियों का एक प्रतिनिधि मंडल पार्लियामेंट के अन्य उदार मेम्बरों से मिला। मजदूरनियाँ भी दृढ़ रहीं। इससे अन्त में कम्पनी को झुकना पड़ा और अधिक मजदूरी, काम करने का कम समय, जुर्माना की प्रथा बन्द आदि माँगें उसको स्वीकार करनी पड़ीं।

स्वयं अभावग्रस्त स्थिति में रहकर भी गरीब और अन्यायों से पीड़ित व्यक्तियों के लिये दिन-रात परिश्रम करना तथा सत्ताधारी लोगों के विरोध का खतरा भी उठाना बेसेण्ट जैसे निःस्वार्थ समाज-सेवियों का काम होता है। हम सबको भी सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में इसी प्रकार का मनोभाव रखकर प्रविष्ट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होना चाहिए। इसमें लाभ, यश अथवा प्रभाव बढ़ने की भावना रखना स्वार्थ युक्त मनोवृति का प्रमाण है। ऐसे व्यक्ति न तो जनता का विशेष हित कर सकते हैं न स्वयं कभी इस क्षेत्र में ऊँचा स्थान पा सकते हैं। इसलिये जनता के सेवकों को श्रीमती बेसेण्ट के चरित्र से यह शिक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिए कि वे मार्ग की कठिनाइयों से कभी विचलित न हों और उद्देश्य की पवित्रता का सदैव पूरा ध्यान रखें। इस प्रकार काम करने वालों को अन्त में अवश्य सफलता मिलती है।

थियासोफिकल सोसाइटी में प्रवेश—

अब श्रीमती बेसेण्ट के जीवन में एक नया और बहुत महत्त्वपूर्ण मोड़ आया। इस पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने स्वयं ही लिखा है कि—"मजदूर आन्दोलन में काम करते हुए मेरे हृदय में यह भावना दृढ़ होती जाती थी कि सामाजिक बुराइयों को दूर करने की कोई दूसरी औषधि भी होनी चाहिये। समाजवादियों के प्रयत्न से मनुष्य की आर्थिक दशा सुधर सकती है, पर सब लोग आपस में ऐक्य भावना रखने लगे, 'मानव बन्धुत्व' के सिद्धान्त को हृदयंगम करके आत्म त्याग और आन्तरिक भक्ति के साथ सेवा करने लगे, इसके लिए किसी और बात की भी आवश्यकता है। मैं सोचा करती थी कि इससे अधिक उदार विचारों वाली सामाजिक—संस्था किस प्रकार बनाई जा सकती है। उस समय मैं बहुत निराश हो जाती थी जब इस असली सुधार का कोई साधन दिखलाई नहीं देता था।

"धीरे-धीरे मेरी समझ में यह आने लगा कि मैंने संसार और जीवन के विषय में जो प्रत्यक्ष वाद के सिद्धान्त ग्रहण कर रखे हैं वे अपूर्ण हैं। इस समय मन की विद्या (मेस्मरेजिम, हिप्नेटिज्म आदि) तेजी से बढ़ती जाती थी। कृत्रिम निद्रा उत्पन्न करके दिमाग से दूर-दूर की बातें कहला देना एक आश्चर्य जनक बात जान पड़ती थी। मैं तो अभी तक शरीर को ही असली चीज समझती थी, इसलिये यह रहस्य मेरी समझ में नहीं आया। मैंने इस सम्बन्ध में पता लगाने का निश्चय किया और इसके साहित्य का अध्ययन और मनन करने लगी।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्रीमती बेसेंण्ट को यह 'असली ज्ञान' १० मई १८८९ को प्राप्त हुआ जब उन्होंने मैडम ब्लैवटस्की की 'सीक्रेट डाक्टरिन' (छिपा सिद्धान्त) नामक पुस्तक पढ़ी। उसी समय से इनके भीतर 'थिसोसोफी' या 'दैवी ज्ञान' का प्रकाश फैलने लगा। इसके एक दिन बाद ही इनकी भेंट मैडम ब्लैवटस्की से हुई, जो उन दिनों लन्दन आई हुई थीं। उस भेंट के समय इनको ऐसा जान पड़ा कि मैडम के शरीर से एक ज्योति-सी निकल कर मेरे शरीर में प्रवेश कर गई। इनकी समझ में आ गया कि "दुनिया की सभी चीजों के पीछे एक अदृश्य आत्मा बैठी है। यही देवता या ईश्वर है, हम स्वयं भी ईश्वर हो हैं।" इसके बाद ही वे मैडम ब्लैवटस्की कि शिष्या बन गई। एक पक्की निरीश्वरवादी को आस्तिक बना देने में योरोप भर के लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ और इसे मैडम ब्लैवटस्की की एक बहुत बड़ी सफलता माना गया।

भारत में शिक्षा प्रचार का कार्य—

इसके कुछ समय पश्चात सन् १८९३ में श्रीमती बेसेन्ट इसी खोज में अध्यात्म-विद्या की जन्म-भूमि भारत में आ गई और यहीं से उन्होंने अध्यात्म तथा जन सेवा के समन्वय का कार्यारम्भ किया। सबसे पहले उन्होंने शिक्षा की तरफ ध्यान दिया। उन्होंने देखा कि यहाँ पर अँगरेजो सरकार तथा ईसाइयों की शिक्षा संस्थाओं में जिस ढङ्ग से पढ़ाया–लिखाया जाता है, वह बड़ा त्रुटि-पूर्ण है। उसके फल से यहाँ के युवकों का ध्यान अपने धर्म की तरफ से हटता जाता है और अपनी संस्कृति तथा पूर्वजों का सम्मान भी उनकी दृष्टि में कम हो जाता है। श्रीमती बेसेन्ट स्वयं लन्दन में एक स्कूल चला चुकी थीं और वहाँ 'स्कूल बोर्ड' नामक संस्था की सदस्या भी रह चुकी थीं। उस अनुभव के अधार पर इन्होंने इस देश में भी एक स्कूल खोलने का विचार किया जिसमें हिन्दू-धर्म तथा संस्कृति की शिक्षा देते हुए ऊँची से ऊँची आधुनिक शिक्षा भी दी जाय। इस उद्देश्य से काशी में 'सेन्ट्रल हिन्दू कालेज' की स्थापना की गई। इसके लिये उन्होंने समस्त भारत का दौरा करके चन्दा इकट्ठा किया। महाराजा बनारस ने नगर के बीच में एक काफी बड़ा स्थान दे दिया यह कालेज बहुत वर्षों तक भारतीय युवकों को राष्ट्रीय दृष्टि से उपयोगी शिक्षा देता रहा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और अन्त में इसी को श्री मदन मोहन मालवीय ने अपने प्रबन्ध में लेकर 'हिन्दू विश्व विद्यालय' के रूप में परिवर्तित कर दिया।

स्त्री शिक्षा की महत्ता—

लड़कों के लिये 'सेन्ट्रल हिन्दू-कालेज की' स्थापना करने के बाद आपने लड़कियों की शिक्षा की तरफ ध्यान दिया। उस समय लड़कियों को आधुनिक ढङ्ग की शिक्षा दिलाना तो दूर साधारण हिन्दी पढ़ाने की भी व्यवस्था बहुत कम थी। अधिकांश लोग तो स्त्री-शिक्षा के विरोध करने वाले ही थे। श्रीमती बेसेन्ट ने लोगों की इस हानिकारक मनोवृति की अलोचना करते हुए कहा—

"जब तक तुम लड़कियों को नहीं पढ़ाओगे तब तक भारत का उद्धार नहीं हो सकता। जब तक भारतीय माताएँ अपने पूर्व गौरव को न जानेंगी तथा अपने बच्चों को पुरानी सभ्यता की बातें नहीं बतलायेंगी कि भारत पहले क्या था और क्या हो गया जब तक वे प्राचीन समय की स्त्रियों के समान न हो जायें, जब तक वे अपनी मातृभूमि को हृदय से प्यार न करने लगें तब तक भारत उतना ही कमजोर रहेगा, जितना आज है। जब तक तुम्हारे पुत्रों और पुत्रियों की योग्यता भविष्य में कामकरने के लिये नहीं बढ़ जाती, जब तक तुम यह न समझलो कि भारत के पुरुषों में ही याज्ञवल्क्य ऋषि जैसे विद्वान् नहीं थे स्त्रियों में भी उनकी स्त्री मैत्रेयी जैसी पंडिता थी, जब तक तुम यह न जान लो कि प्राचीन काल की भारतीय स्त्रियाँ वेद-मन्त्रों की रचना किया करती थीं जबकि आजकल स्त्रियों को उनके सुनने का भी अधिकार नहीं है--जब तक तुम इन प्राचीन आदर्शों पर ध्यान देकर आगे नहीं बढ़ोगे तब तक भारत कभी नहीं उठ सकता।'

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये हिन्दू-कालिज में ही कन्याओं को पढ़ाने का एक विभाग खुलवा दिया कुछ समय बाद थियोसोफिकल सोसाइटी की तरफ से एक बड़ा लड़कियों का स्कूल खुलवाया जो अभी तक एक प्रसिद्ध शिक्षा संस्था मानी जाती है।

सन् १९७० में आप 'थियोसोफिकल सोसाइटी' की प्रधान चुन ली गई। तब से अनेक बार योरोप अमरीका, आस्ट्रेलिया की यात्रा करके उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समाज का संगठन और प्रचार करती रहीं। इतनी लम्बी यात्रायें करना, साथ ही व्याख्यान देना और संगठन को मजबूत बनाना, बहुसंख्यक पुस्तकें और सामयिक पत्रों के लिये प्रतिदिन घन्टों लिखते रहना भारत के राजनीतिक आंदोलन में भी भाग लेते रहना—ये सब काम इतने बड़े थे कि लोगों को इनकी कार्य-क्षमता पर आश्चर्य होता था। ये अपना काम बड़ी फुर्ती से करती थीं और चलती हुई रेल में भी कुछ न कुछ लिखने-पढ़ने का काम करती रहती थीं। इनके नेतृत्व में 'थियोसोफी समाज' ने बहुत उन्नति की भारत और अन्य देशों में शिक्षा की उन्नति के लिये इन्होंने 'थियोसोफिकल शिक्षण ट्रस्ट' की स्थापना की जो जगह-जगह नये स्कूल खोलकर शिक्षा का प्रचार करता रहता है।

भारत में 'होमरूल' आन्दोलन—

भारतवर्ष में राजनैतिक जागृति उत्पन्न करने के लिये श्रीमती बेसेन्ट ने सन् १९१३ में 'कामन वील' नामक साप्ताहिक पत्र अँगरेजी में निकालना आरम्भ किया। इसका उद्देश्य अध्यात्म का समयानुकूल रूप में विवेचन करना तथा भारतवासियों में अपने राजनीतिक अधिकारों का ज्ञान फैलाना था। यह पत्र जब तक चला अपने उच्च विचारों के कारण इसका देश और विदेश में सर्वत्र सम्मान हुआ।

इसके कुछ ही समय बाद आपने 'मद्रास स्टैन्डर्ड' पत्र को खरीद कर 'न्यु इन्डिया'के नाम से एक दैनिक पत्र प्रकाशित किया। श्रीमती बेसेन्ट स्वयं ही इसकी सम्पादिका थीं और इसका आदर्श वाक्य (मोटो) था—"देश, नरेश, महेश के लिए संघर्ष।" इसका आशय यह था कि श्रीमती बेसेन्ट भारतवर्ष को राजनीतिक अधिकार दिये जाने की पूर्ण समर्थक थीं, पर वे यह नहीं चाहती थीं कि भारत का सम्बन्ध इंगलैंड से बिल्कुल ही टूट जाय। इस कारण बहुत से उग्रवादी भारतीय आपके 'होमरूल' आन्दोलन से सहमत नहीं थे। पर आज जब हमको पूर्ण स्वाधीनता का अधिकार प्राप्त हो चुका है तब भी 'ब्रिटिश कामन वेल्थ' से भारत का सम्बन्ध तोड़ा नहीं गया है और उसकी कान्फ्रेंसों में यहाँ के प्रधान मन्त्री सदस्य के रूप से भाग लेते रहते हैं। इस दृष्टि से श्रीमती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बेसेन्ट की सम्मति सर्वथा निस्सार नहीं थी। 'न्यू इंडिया' की एक विशेषता यह भी थी अँगरेजी का दैनिक होने पर भी राष्ट्रीय-भाषा के नाते उसमें एक कालम हिन्दी का भी रखा जाता था।

यद्यपि अनेक भारतीय राजनीतिज्ञों ने श्रीमती बेसेन्ट के आन्दोलन से असहमति प्रकट की, पर फिर भी भारतीय राजनीति में उसका काफी प्रभाव पड़ा। इनको आन्दोलन करने का जो अभ्यास इंगलैन्ड में हो चुका था उसी का परिचय उन्होंने यहाँ भी दिया कुछ ही समय में इन्होंने लेखों और पर्चों की झड़ी लगादी। लन्दन में भी पर्चे बाँट कर भारतीय जनता की 'माँग' का संदेश प्रचारित किया जाने लगा। "भारत स्वाधीनता के लिये कैसे उद्यत हुआ ?" और "भारत एक राष्ट्र" जैसी पुस्तकें लिखकर जनता को उत्साहित किया जाने लगा। इसके साथ ही वे देश में चारों तरफ दौरा करके व्याख्यानों द्वारा भारत के राजनीतिक अधिकारों के लिये जोरदार आन्दोलन चलाने लगीं।

इनके प्रचार कार्य का प्रभाव सरकार पर शीघ्र ही पड़ा और १० जुलाई १९१६ को बम्बई के गवर्नर ने इनको बम्बई प्रान्त में आने और भाषण करने से रोक दिया। सितम्बर १९१६ में मध्य प्रांत की सरकार ने भी उनको अपने प्राँत में आने पर रोक लगादी - इन घटनाओं से जनता में काफी उत्साह फैला और श्रीमती बेसेन्ट का प्रभाव बढ़ने लगा।

१६ जून १९१७ को मद्रास के गवर्नर लार्ड पेन्टलैन्ड ने आपको बुला कर कहा--"आप यह राजनैतिक आन्दोलन बन्द करदें। इस विषय में हम भारतीय और अँगरेज किसी में भेद नहीं कर सकते। अगर आपने हमारी सलाह को नहीं माना तो सरकारी हुक्म से आपके सब काम बन्द करा दिये जायेंगे।"

आपने उत्तर दिया----"गवर्नर साहब ! आपको जो शक्ति मिली हुई है उससे आप जो चाहे कर सकते हैं। मैं तो निराधार हूँ। पर मैं इतना कह देना चाहती हूँ कि ऐसा करके आप ब्रिटिश--राज्य को सेवा नहीं करेंगे वरन् उसको एक घातक धक्का लगायेंगे।"

श्रीमती बेसेन्ट ने अपने जीवन में कभी कायरता नहीं दिखाई थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्होंने गवर्नर साहब का आशय समझ लिया और वे गिरफ्तारी के लिये तैयार होगई। वहां से वापस आते ही इन्होंने देश-वासियों के नाम एक विदाई का संदेश लिखा, जिसमें कहा गया था—

मैं "साफ लिख देना चाहती हूँ, क्योंकि ये मेरे अन्तिम शब्द हैं। मैं एक जबर्दस्ती की खामोशी व गिरफ्तारी में भेजी जा रही हूँ। मेरा कसूर यही माना गया है कि मैं भारत को प्यार करती हूँ और उसे जगाने की कोशिश कर रही हूँ। पर मेरा सिद्धान्त यह है कि इज्जत खोने से अच्छा आजादी खोना है

"मैं बूढ़ी हूँ पर मुझे विश्वास है कि मरने से पहले मैं भारत को स्वराज्य प्राप्त किये देख सकूँगी। यदि इस शानदार भविष्य को प्राप्त करने में मैं कुछ भी सहायता कर सकी तो मुझे पूरा सन्तोष हो जायगा। ईश्वर भारत को बचावे। बन्देमातरम्।"

लाट साहब से मिलकर आने के घण्टे भर बाद ही इनको दो साथियों सहित नजरबन्द कर दिया गया। यह समाचार तुरन्त देश भर में बिजली की तरह फैल गया। चारों ओर विरोध सभायें होने लगीं और जो लोग श्रीमती बेसेण्ट से सहमत न थे वे भी सरकार को फटकारने लगे। इस घटना के फल से अँगरेजी माल के बहिष्कार का आन्दोलन जोर पकड़ गया और कितने ही लोग सत्याग्रह की चर्चा भी करने लगे। इसका प्रभाव सरकार पर भी पड़ा और २० अगस्त १९१७ के भारत मैत्री की तरफ से यह घोषणा की गई कि— "भारत में अँगरेजी राज्य का उद्देश्य भारत को स्वराज्य अधिकार देना है और इस सम्बन्ध में जाँच करने के लिये भारत मंत्री मि० मोंटेगु शीघ्र ही भारत आयेंगे।" इसके कुछ समय पश्चात् सरकार ने श्रीमती बेसेण्ट को छोड़ दिया और जनता ने भी उनकी सेवाओं का आदर करके भारत का सर्वोच्च राष्ट्राय सम्मान उनको प्रदान किया। सन् १९१७ में कलकत्ता काँग्रेस की अध्यक्षा वे ही बनाई गई।

श्रीमती बेसेण्ट हमारे उन देश भाइयों के लिये अत्यन्त प्रेरणाप्रद हैं जो गई-गुजरी परम्पराओं के नाम पर अपना और समाज का सुधार करने के महान् उद्देश्य से विमुख रहते हैं। इस प्रकार के लोग बड़ी संकीर्ण मनोवृत्ति के होते है और संसार के अन्य देशों की तो बात ही क्या अपने पड़ोसियों तथा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अन्य प्रांत वालों को भी 'गैर' या 'परदेशी' समझा करते हैं। पर श्रीमती बेसेण्ट ने सात-आठ हजार मील की दूरी पर बसे हुए और भाषा, वेष, आचार विचार आदि सब दृष्टियों से भिन्न भारत-देश से आत्मीयता का सम्बन्ध स्थापित किया और इसकी इतनी सेवा की कि जितनी 'भारतीय' होने का गर्व रखने वाले भी बहुत कम कर पाते हैं। इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि संसार में भारततर्ष और भारतीय धर्म का गौरव बढ़ाने में जितना परिश्रम श्रीमती बेसेण्ट ने किया उतना शायद ही हममें से किसी ने किया होगा।

वे यद्यपि जन्म से ईसाई थीं और उनका विवाह भी एक पादरी से हुआ था, पर फिर भी उन्होंने अन्ध-परम्परा पर चलते रहने के बजाय 'सत्य' की खोज की और सब तरह की हानि और कष्ट उठाकर भी जिस सिद्धान्त को सत्य समझा उसी का अनुसरण किया। इस प्रकार की परीक्षा प्रधान प्रवृत्ति और दृढ़ता पुरुषों में भी बहुत कम देखने में आती है।

उन्होंने स्त्री होते हुए भी जो महान् उपलब्धियाँ प्राप्त कीं वे भी कम प्रशंसनीय नहीं हैं। खासकर हमारे देश की महिलायें जो अब भी अपना कार्य-क्षेत्र निज की गृहस्थी को ही मानती हैं और सार्वजनिक कार्यों में भाग लेना अनावश्यक—अनुपयुक्त बतलाती हैं, उनसे बहुत शिक्षा ग्रहण कर सकती हैं। श्रीमती बेसेण्ट ने तर्क और खोज का आश्रय लेकर धर्म और जन सेवा के संबंध में जो कार्य किया उसका महत्त्व चिरकाल तक स्थिर रहेगा। अन्य सत्कार्यों के साथ निस्सन्देह उन्होंने नारी-जाति के उत्थान में भी अनुपम कार्य किया है।

सन् १९१० से भारत देश के राजनीतिक क्षेत्र में महात्मा गाँधी का अविर्भाव हुआ। उनके सिद्धान्तों से मतभेद होने के कारण श्रीमती बेसेण्ट का प्रभाव भारतीय राजनीति पर से घटने लग गया। तो भी ये अपने ढङ्ग से जीवन के अन्तिम समय तक देश सेवा और जन-कल्याण के कार्य करती रहीं और सितम्बर सन् १९३३ में ८७ वर्ष की अवस्था मे सावजनिक सेवा करते हुए ही आपका देहावसान हुआ।

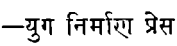

मुद्रक:—युग निर्माण प्रेस मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-चरित्र जन-मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मङ्गल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जन-कल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवम् आवश्यक मानी जाती रही है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है, उसमें महामानवों के जीवन-चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन-चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन-चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को भी इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

50

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

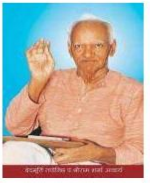

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org